सूत्र के दो अर्थ होंगे :-

उच्चार्यमाण अन्तिम वर्ण से आगे उच्चारणाभाव 'अवसान' संज्ञक होता है।

उच्चार्यमाण अन्तिम वर्ण 'अवसान' संज्ञक होता है।

उदाहरणार्थ 'राम+सु' में उकार-लोप और रुत्व हो 'रामर्' रूप बनता है। यहाँ प्रथम अर्थ रकार के पश्चात् उच्चारणाभाव को 'अवसान' संज्ञा होती है और दूसरे अर्थ में स्वतः रकार की। दोनों ही अर्थों में अवसान-संज्ञा होने पर खरवसानयोः से रकार को विसर्ग हो 'रामः' रूप सिद्ध होता है।

सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ।

एकविभक्तौ यानि सरूपाण्येव तेषामेक एव शिष्यते।

राम:

राम+सु	प्रथमा विभक्ति एकवचन की विवक्षा में प्रातिपदिक राम से सु
राम स्	अनुबन्ध लोप
राम र्	र् की अवसान संज्ञा तथा (सर्वापकारक) सर्वापकारक।
राम :	सकार को विसर्ग